A-0429

Total Pages : 4 **Roll No. ----------**

DMA-101

चिकित्सा ज्योतिष के मूल सिद्धान्त

Diploma in Medical Astrology (DMA)

1st Year, Examination 2024 (Dec.)

Time: 2:00 hrs Max. Marks: 100

नोट : यह प्रश्नपत्र सौ (100) अंकों का है जो दो (02) खण्डों, क तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है। परीक्षार्थी अपने प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर–पुस्तिका तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त (बी) उत्तर पुस्तिका जारी नहीं की जायेगी।

P.T.O.

खण्ड–'क'

(दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए छब्बीस (26) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

[2x26=52]

Q.1. रोगों का परिचय एवं प्रकार को विस्तारपूर्वक लिखिए।

Q.2. महामारी से क्या तात्पर्य है विस्तारपूर्वक उल्लेख कीजिए।

Q.3. पुनर्जन्म क्या है? इसका विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

Q.4. कर्मफल–भाग्यफल से क्या तात्पर्य है, विस्तारपूर्वक लिखिए।

Q.5. चिकित्सा के कितने भेद हैं? ज्योतिषीय चिकित्सा को विस्तारपूर्वक लिखें।

अथवा

आयुर्वेद और ज्योतिष के परस्पर संबन्ध के विषय में विस्तारपर्वूक लिखिए।

खण्ड–'ख'

(लघु उत्तरों वाले प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए बारह (12) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

[4x12=48]

Q.1. सहज रोग से क्या अभिप्राय है? स्पष्ट कीजिए।

Q.2. जीव के कर्मगति का क्या प्रभाव है स्पष्ट कीजिए।

Q.3. रोग विचार की परम्परा में नक्षत्रों की भूमिका पर टिप्पणी लिखिए।

Q.4. मध्यमायु का विचार किस प्रकार किया जाता है उल्लेख कीजिए।

P.T.O.

Q.5. रोगोत्पत्ति सिद्धांत पर प्रकाश डालिए।

Q.6. षष्ठ भाव जनित विचारणीय विषयों का उल्लेख कीजिए।

Q.7. काणत्व योगों को उदाहरण सहित प्रस्तुत कीजिए।

Q.8. रोग विचार में लग्नेश (प्रथम भाव का स्वामी) की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

****